संतान सुख बाधा निवारण के उपयोगी टोटके:-

1. गर्भपात नहीं होगा :-

जब गर्भधारण हो गया हो, तो एक चाँदी की बांसुरी बनाकर कृष्ण–राधा के मंदिर में पति–पत्नी दोनों, गुरुवार के दिन चढ़ाएं, तो गर्भपात नहीं होगा। अनुभूत उपाय है।

2. सुसंन्तति की प्राप्ति:-

जिसके संतान नहीं होती हैं, होकर मर जाती हैं, रोगी रहती हैं, गर्भपात हो जाता है, केवल कन्यायें होती हैं तो इन कारणों से माता–पिता का दुखी रहना स्वाभाविक है। इस प्रकार के दुःखों से भगवती की कृपा द्वारा छुटकारा मिल सकता है।

इस प्रकार की साधना में स्त्री–पुरूष दोनों ही सम्मिलित हो सकें तो बहुत ही अच्छा, एक पक्ष के द्वारा ही पूरा भार कन्धे पर लिये जाने से आंशिक सफलता ही मिलती है। प्रातः काल नित्यकर्म से निवृत्त होकर पूर्वाभिमुख होकर साधना पर बैठें। नेत्र बन्द करके श्वेत वस्त्राभूषण अलंकृत किशोर आयु वाली, हाथ में कमल पुष्प लिये गायत्री का ध्यान करें।

'यै' बीज के तीन सम्पुट लगाकर गायत्री का जप, **पुत्रजीवा** की माला पर करें। नासिका से सांस खीचतें हुए पेडू तक ले जानी चाहिये। पेडू को जितना वायु से भरा जा सके भरना चाहिये। फिर **'यै'** बीज सम्पुटित गायत्री का कम से कम एक माला जप करना चाहिये।

इस साधना के दिनों में प्रत्येक रविवार चावल, दूध, दही आदि केवल श्वेत वस्तुओं का ही भोजन करें।

3. पुत्रदाता प्रयोग

शुभ नक्षत्र–योग में, गुंजा–मूल को ताबीज में भरकर कमर में धारण करने वाली स्त्री, यदि स्वस्थ है तो पति–सम्पर्क करने पर पुत्र लाभ प्राप्त करती है।

विधि–

इस यंत्र को स्वर्ण पत्र पर अंकित करवा कर या भोजपत्र पर चमेली की कलम एवं अष्टगंध की स्याही से यंत्र बनावें। पूजन आदि करके स्थापित करें। उक्त मंत्र 31 दिन तक प्रतिदिन 1000 की संख्या में यंत्र के सन्मुख बैठकर जाप करें तथा प्रतिदिन यंत्र का पूजन करें। तत्पश्चात यंत्र स्त्री के गले में धारण करावें। इस प्रयोग के प्रभाव से बांझ औरत भी गर्भ धारण करने में सक्षम हो जाती है।

नैवेद्य– गुड़ की खीर का प्रतिदिन नैवेद्य चढ़ावें।

8. संतान सुख के लिये :-

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में आम की जड़ को लाकर दूध में घिसकर पिलाने से बांझ स्त्री को संतान की प्राप्ति होती है। कन्या जन्म के पश्चात् पुत्र जन्म की कामना करने वाले लोगों को कन्या के नामकरण वाले दिन उस कन्या के चरणस्पर्श करते हुये पुत्र जन्म की प्रार्थना करें तथा पूरा परिवार उस दिन जलेबी व खीर का प्रसाद ग्रहण करें तो अगला लड़का ही होगा।

9. बालक नाल का अमूल्य प्रयोग:-

(क) किसी बच्चे की नाल जैसे ही सूखकर गिरे, गुप्त रूप से उसे किसी प्रकार प्राप्त कर लें, इसे चुपचाप किसी बंध्या स्त्री को किसी वस्तु में मिलाकर खिला दें, बंध्या पुत्रवती होगी।

(ख) बालक का नाल अपने घर में कही ऊँचे स्थान में सुरक्षित रखने से बालक का घर के प्रति विशेष मोह बना रहता है। बच्चे घर से भागते नहीं।

10. बंध्या को संतान प्राप्ति :-

(क) रविवार को जड़ सहित तुलसी का पेड़ उखाड़ लें, इसे एक रंग की गाय के दूध में पिसवा कर ऋतुकाल में पाँच दिन नित्य 4/4 तोला पिये (कुमारी कन्या के हाथ से पिसवा कर उसी के हाथ से पिये, कन्या 10 वर्ष से कम आयु की हो)

(ख) अथवा ऋतुकाल के पाँच दिनों में प्रतिदिन एक तोला तुलसी और एक रुद्राक्ष एक रंग वाली गाय के दूध के साथ उपरोक्त विधि से (कुमारी कन्या से पिसवा कर सेवन करें।

11. सन्तान प्राप्ति :-

ऋद्धिमंत्र– **ऊँ ह्रीं अर्हंणमो चारणाणं।**

मूलमंत्र– **ऊँ श्रां श्रीं श्रूं श्रः ठः ठः स्वाहा।**

(1) उपरोक्त मंत्रों के पाठ करने से,

(2) यंत्र निर्माण कर यंत्र पूजन से,

(3) यंत्र धारण करने से सन्तान की प्राप्ति व सन्तान सुख प्राप्त होगा। साथ ही राजद्वार में जय, सुख, सौभाग्य तथा धन–सम्पत्ति में भी वृद्धि होगी।

12. पुत्रदाता प्रयोग :-

शुभ नक्षत्र योग में, गुंजा की जड़ को धातु के कवच में भरकर कमर में बांधने से स्त्री (यदि स्वस्थ है) तो पति–सम्पर्क करने पर पुत्र–लाभ प्राप्त करती है।

13. गर्भपात से रक्षा:-

ऋद्धिमंत्र– **ऊँ ह्रीं अर्हंणमो खेलोसहिपत्ताणं।**

मूलमंत्र– **ऊँ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं रौं सौं पद्मावत्यै देव्यै नमोनमः स्वाहा।**

उपरोक्त मंत्र का जप करने, यंत्र का पूजन करने से गर्भपात का भय नहीं होता। अथवा यंत्र प्रतिष्ठादि करवा कर उपरोक्त मंत्रों से 21 बार अभिमंत्रित कर गूगल की धूप दें और यंत्र को कमर में बांधे।

14. सुखपूर्वक प्रसव होने का मंत्र :-

विधि– यदि गर्भवती को अधिक कष्ट हो तो सुख से प्रसव के लिये मंत्र पढ़ते हुए लाल चंदन की लकड़ी से कांसे की थाली में चक्रव्यूह बनायें फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करके उसे पिलायें।

मंत्र– हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनाम यक्षिणी।
तस्य नुपुरशब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्।।

विशेष– चिरचिरा (चिचिड़ी) मस्तक में बांधने से सुख से प्रसव होता है। इस मंत्र को होली या दीपावली के पर्व पर 11 माला जप कर सिद्ध कर लें।

15. पुत्र प्राप्ति के लिये :-

मंत्र– ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरू कुरू स्वाहा।

इस मंत्र का आम के वृक्ष पर बैठकर एकाग्र मन से जो एक वर्ष तक निरंतर जप करता है उसको अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा भगवान शंकर जी ने कहा है।

16. सुखद प्रसव के लिए मंत्र :-

आकाश टले पवन टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रित्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़ें।

विधि– ताजा शुद्ध जल को सात बार मंत्र पढ़कर अभिमंत्रित करके पिलाने का विधान है।

17. जडी धारण से संतान सुख संभव :-

बरगद के पेड़ की जड़ को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के दिन, प्राप्त करके कोई ऐसी महिला जिसको संतान का अभाव हो, वह किसी धागे में बांध कर

संतान / वंश की संतान, पुत्र पर्याय

अपनी भुजा पर धारण करती है तो उसे संतान लाभ हो सकता है।

18. संतानहीनता :

निःसंतान दम्पति संतान गोपाल यंत्र स्थापित करें व संतान गोपाल स्रोत या विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने से लाभ प्राप्त होता है। गौमाता को चारा खिलाऐं एवं उसकी सेवा करें। किसी गरीब व्यक्ति को दान स्वरूप गाय देने से भी फायदा मिलता है।